पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

CLASS-IX

HINDI

PA-3-&Remaining Syllabus

STUDY-MATERIAL

2020-21

Cahpters:-

1-Dharm ki aad

2-Haamid khan

3-Diye jal uthe

Grammer:-

1-Sandhi

2-Viraam

3-Shuddh-Ashuddh-Vartanii

गद्य भाग

पाठ-7 'धर्म की आड़'

(गणेश शंकर विद्ध्यार्थी)

धर्म की आड़-सार:-

लेखक कहता है कि आज देश में ऐसा समय आ गया है कि हर तरफ केवल धर्म की ही धूम है। अनपढ़ और मन्दबुद्धि लोग धर्म और सच्चाई को जानें, या न जानें, परंतु उनके नाम पर किसी पर भी गुस्सा कर जाते हैं और जान लेने और जान देने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। गलती उन कुछ चलते-पुरज़ों अर्थात पढे-लिखे लोगों का, जो मूर्ख लोगों की शक्तियों और उत्साह का गलत उपयोग इसलिए कर रहे हैं ताकि उन मूर्खों के बल के आधार पर पढे-लिखे लोगों का नेतृत्व और बड़प्पन कायम रहे। इसके लिए धर्म और सच्चाई की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे आसान लगता है। हमारे देश के साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठी हुई है कि धर्म और सच्चाई की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना बिलकुल सही है। पाश्चात्य देशों में, धनी लोगों की, गरीब मज़दूरों की झोंपड़ी का मज़ाक उड़ाते ऊँचे-ऊँचे मकान आकाश से बातें करते हैं! गरीबों की कमाई ही से वे अमीर से अमीर होते जा रहे हैं, और उन ग़रीब मजदूरों के बल से ही वे हमेशा इस बात का प्रयास करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें। ताकि वे हमेशा अमीर बने रहें। गरीबों का धनवान लोगों के द्वारा शोषण किया जाना इतना बुरा नहीं है, जितना बुरा धनवान लोगो का मजदूरों की बुद्धि पर वार करना है। धर्म और सच्चाई के नाम पर किए जाने वाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए, साहस और दृढ़ता के साथ, उद्योग होना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक भारतवर्ष में हमेशा बढ़ते जाने वाले झगडे कम नहीं होंगे। चाहे धर्म की कोई भी भावना हो, किसी दशा में भी वह किसी दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता को छीनने या नष्ट करने का साधन नहीं बननी चाहिए। आपका मन चाहे जिस तरह चाहे उस तरह का धर्म मानें, और दूसरों का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह माने। लेखक कहता है कि दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए इस देश में कोई भी स्थान न हो। देश की स्वतंत्रता के लिए जो उद्योग किया जा रहा था उसका वह दिन बिना किसी शक के कहा जा सकता है कि बहुत बुरा था, जिस दिन, स्वतंत्रता के क्षेत्र में पैगंबर या बादशाह का प्रतिनिधि, मुल्ला, मौलवियों और धर्माचारियों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया। लेखक कहता है कि एक प्रकार से उस दिन हमने स्वतंत्रता के क्षेत्र में, एक कदम पीछे हटकर रखा था। अपने उसी पाप का फल आज हमें भोगना पड़ रहा है। क्योंकि आज धर्म और ईमान का ही बोल-बाला है। लेखक कहता है कि महात्मा गांधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते हैं। वे एक कदम भी धर्म के बिना चलने के लिए तैयार नहीं। परंतु

गाँधी जी की बात पर अम्ल करने के पहले, प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि वह भली-भाँति समझ ले कि महात्माजी के 'धर्म' का स्वरूप क्या है? गांधी कहते हैं कि अजाँ देने, शंख बजाने, नाक दाबने और नमाज़ पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्ध आचरण और अच्छा व्यवहार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिए और पंच-वक्ता नमाज़ भी अदा कीजिए, परन्तु ईश्वर को इस प्रकार रिश्वत के दे चुकने के पश्चात्, यदि आप अपने को दिन-भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुँचाने के लिए आज़ाद समझते हैं तो, इस धर्म को, आगे आने वाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आपका आचरण दूसरों के लिए सही नहीं है तो आप चाहे कितनी भी पूजा अर्चना नमाज़ आदि पढ़ लें कोई फ़ायदा नहीं होगा। ईश्वर इन नास्तिकों जिनका कोई धर्म नहीं होता ऐसे लोगों को अधिक प्यार करेगा, और वह अपने पवित्र नाम पर अपवित्र काम करने वालों से यही कहना पसंद करेगा। ईश्वर है और हमेशा रहेगा। लेखक सभी से प्रार्थना करता है कि सभी मनुष्य हैं, मनुष्य ही बने रहें पशु न बने।

शब्दार्थ -

उत्पात – खुरापात

बेजा - गलत

ईमान – सच्चाई

जाहिल मूर्ख -

स्वार्थ सिद्धि - अपना स्वार्थ सिद्ध करना

धूर्त - छली, पाखंड

खिलाफत - पैगंबर या बादशाह का प्रतिनिधि होना

प्रपंच - छल, धोखा

भलमनसाहत - सज्जनता, शराफत

वाजिब - सही, उचित

अट्टालिकाएँ - ऊँचे-ऊँचे मकान

दोष गलती -

धनाढ्य - धनवान

अनियंत्रित - जो नियंत्राण में न हो, मनमाना

निःसंदेह - बिना किसी शक के

मज़हबी - धर्म विशेष से संबंध रखने वाला

पग - कदम

कसौटी - परख, जाँच

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-**

1-आज धर्म के नाम पर क्या-क्या हो रहा है?

1-आज धर्म के नाम पर उत्पात किए जाते हैं, जिद् की जाती है और आपसी झगड़े करवाए जाते हैं।

2-धर्म के व्यापार को रोकने के लिए क्या उद्योग होने चाहिए?

2-धर्म के व्यापार को रोकने के लिए हमें कुछ स्वार्थी लोगों के बहकावे में नहीं आना चाहिए। हमें अपने विवेक से काम लेते हुए धार्मिक उन्माद का विरोध करना चाहिए।

3-लेखक के अनुसार, स्वाधीनता आंदोलन का कौन-सा दिन सबसे बुरा था?

3-आज़ादी के आंदोलन के दौरान सबसे बुरा दिन वह था जब स्वाधीनता के लिए खिलाफ़त, मुँल्ला मौलवियों और धर्माचार्यों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया गया।

4-साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में क्या बात अच्छी तरह घर कर बैठी है?

4-अति साधारण आदमी तक के दिल में यह बात घर कर बैठी है कि धर्म और ईमान की रक्षा में जान देना उचित है।

5-धर्म के स्पष्ट चिह्न क्या हैं?

5-धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं-शुद्ध आचरण और सदाचार।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1-चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं?

1-चलते-पुरज़े लोग अपनी स्वार्थ की पूर्ति एवं अपनी महत्ता बनाए रखने के लिए भोले-भाले लोगों की शक्तियों और उत्साह का दुरुपयोग करते हैं। वे धार्मिक उन्माद फैलाकर अपना काम निकालते हैं।

2-चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं?

2-आदमी साधारण आदमी की धर्म के प्रति अटूट आस्था का लाभ उठाते हैं। वे अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ऐस आस्थावान धार्मिक लोगों को मरने-मारने के लिए छोड़ देते हैं।

3-आनेवाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा?

3-कुछ लोग यह सोचते हैं कि दो घंटे का पूजा-पाठ और पाँचों वक्त की नमाज पढ़कर हर तरह का अनैतिक काम करने के लिए स्वतंत्र हैं तो आने वाला समय ऐसे धर्म को टिकने नहीं देगा।

4-कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा?

4-देश की आजादी के लिए किए जा रहे प्रयासों में मुल्ला, मौलवी और धर्माचार्यों की सहभागिता को देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा। लेखक के अनुसार, धार्मिक व्यवहार से स्वतंत्रता की भावना पर चोट पहुँचती है।

5-पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है?

5-पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धनों के बीच घोर विषमता है। वहाँ धन का लालच दिखाकर गरीबों का शोषण किया जाता। है। गरीबों की कमाई के शोषण से अमीर और अमीर, तथा गरीब अधिक गरीब होते जा रहे हैं।

6-कौन-से लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं?

6-नास्तिक लोग, जो किसी धर्म को नहीं मानते, वे धार्मिक लोगों से अच्छे हैं। उनका आचरण अच्छा है।वे सदा सुख-दुख में एक दूसरे का साथ देते हैं। दूसरी ओर धार्मिक लोग एक दूसरे को धर्म के नाम पर लड़वाते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1-धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को कैसे रोका जा सकता है?

1-धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को रोकने के लिए दृढ़-निश्चय के साथ साहसपूर्ण कदम उठाना होगा। हमें साधारण और सीधे-साधे लोगों को उनकी असलियत बताना होगा जो

धर्म के नाम पर दंगे-फसाद करवाते हैं। लोगों को धर्म के नाम पर उबल पड़ने के बजाए बुद्धि से काम लेने के लिए प्रेरित करना होगा। इसके अलावा धार्मिक ढोंग एवं आडंबरों से भी लोगों को बचाना होगा।

2-'बुधि पर मार' के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं?

2-बुद्धि की मार से लेखक का अर्थ है कि लोगों की बुद्धि में ऐसे विचार भरना कि वे उनके अनुसार काम करें। धर्म के नाम पर, ईमान के नाम पर लोगों को एक-दूसरे के खिलाफ भड़काया जाता है। लोगों की बुद्धि परपरदा डाल दिया जाता है। उनके मन में दूसरे धर्म के विरुद्ध जहर भरा जाता है। इसका उद्देश्य खुद का प्रभुत्व बढ़ाना होता है।

3-लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए?

3-लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना ऐसी होनी चाहिए, जिसमें दूसरों का कल्याण निहित हो। यह भावना पवित्र आचरण और मनुष्यता से भरपूर होनी चाहिए। इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने,पूजा-पाठ की विधि अपनाने की छूट होनी चाहिए। इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। धार्मिक भावनापशुता को समाप्त करने के साथ मनुष्यता बढ़ाने वाली होनी चाहिए।

4-महात्मा गांधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

4-महात्मा गाँधी अपने जीवन में धर्म को महत्त्वपूर्ण स्थान देते थे। वे एक कदम भी धर्म विरुद्ध नहीं चलतेथे। परंतु उनके लिए धर्म का अर्थ था-ऊँचे विचार तथा मन की उदारता। वे 'कर्तव्य' पक्ष पर जोर देते थे। वे धर्म के नाम पर हिंदू-मुसलमान की कट्टरता के फेर में नहीं पड़ते थे। एक प्रकार से कर्तव्य ही उनके लिए धर्म था।

5-सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है?

5-सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारनी इसलिए ज़रूरी है कि पूजा-पाठ करके, नमाज़ पढ़कर हम दूसरों का अहित करने, बेईमानी करने के लिए आज़ाद नहीं हो सकते। आने वाला समय ऐसे धर्म को बिल्कुल भी नहीं टिकने देगा। ऐसे में आवश्यक है कि हम अपना स्वार्थपूर्ण आचरण त्यागकर दूसरों का कल्याण करने वाला पवित्र एवं शुद्धाचरण अपनाएँ। आचरण में शुद्धता के बिना धर्म के नाम पर हम कुछ भी करें,सब व्यर्थ है।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

1-उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है।

1-उक्त कथन का आशय है कि साधारण आदमी में सोचने-विचारने की अधिक शक्ति नहीं होती। वह अपने धर्म, संप्रदाय के प्रति अंधी श्रद्धा रखता है। उसे धर्म के नाम पर जिस काम के लिए कहा जाता है, वह उसी काम को करने लगता है। उसमें अच्छा-बुरा सोचने-विचारने की शक्ति नहीं होती।

2-यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना, और फिर धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ-सिधि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।

2-यहाँ अर्थात् भारत में कुछ लोग अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए लोगों का बौधिक-शोषण करते हैं। वे धर्म के नाम पर तरह तरह की विरोधाभासी बातें साधारण लोगों के दिमाग में भर देते हैं और धर्म के नाम पर उन्हें गुमराह कर उनका मसीहा स्वयं बन जाते हैं। इन धर्मांध लोगों को धर्म के नाम पर आसानी से लड़ाया- भिड़ाया जा सकता है। कुछ चालाक लोग इनकी धार्मिक भावनाएँ भड़काकर अपनी स्वार्थपूर्ति करते हैं।

3-अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी।
3-इस उक्ति का अर्थ है कि आनेवाले समय में किसी मनुष्य के पूजा-पाठ के आधार पर उसे सम्मान नहीं मिलेगा। सत्य आचरण और सदाचार से भले आदमी की पहचान की जाएगी।
4-तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो!
4-स्वयं को धार्मिक और धर्म का तथाकथित ठेकेदार समझने वाले साधारण लोगों को लड़ाकर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। ऐसे लोग पूजा-पाठ, नमाज़ आदि के माध्यम से स्वयं को सबसे बड़े आस्तिक समझते हैं। ईश्वर ऐसे लोगों से कहता है। कि तुम मुझे मानो या न मानो पर अपने आचरण को सुधारो, लोगों को लड़ाना-भिड़ाना बंद करके उनके भले की सोचो। अपनी इंसानियत को जगाओ। अपनी स्वार्थ-पूर्ति की पशु- प्रवृत्ति को त्यागो और अच्छे आदमी बनकर अच्छे काम करो।

भाषा-अध्ययन

1-शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए-

1-धर्म - अधर्म
2-ईमान - बेईमान
3-साधारण - असाधारण
4-स्वार्थ - परमार्थ
5-दुरुपयोग - सदुपयोग
6-नियंत्रित - अनियंत्रित
7-स्वाधीनता - पराधीनता

2-निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए-

ला, बिला, बे, बद, ना, खुश, हर, गै

1-ला - लापता, लावारिस
2-ना - नासमझ, नालायक
3-बिला - बिलावज़ह, बिलानागा
4-खुश - खुशकिस्मत, खुशबू
5-बद - बदनसीब, बदतमीज़
6-हर - हरवक्त, हर दिन
7-बे - बेवफा, बेरहम
8-गैर - गैरहाजिर, गैरकानूनी

संचयन भाग

पाठ-5-'हामिद खां'

(एस.के.पोट्टेकाट)

हामिद खां-सार:-

प्रश्न–एस. के. पोट्टेकाट द्वारा रचित 'हामिद खाँ' नामक पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–'हामिद खाँ' कहानी हिंदू मुसलिम एकता का पाठ पढ़ाती है। कहानी का सार इस प्रकार है–

लेखक तक्षशिला में–दो साल पहले लेखक पाकिस्तान में तक्षशिला के खंडहर देखने गया था। वह रेलवे स्टेशन के पास स्थित एक गाँव में निकल पड़ा। वहाँ की गलियाँ तंग, घनी तथा बेतरतीब थीं। जगह जगह धुएँ, मच्छर और गंदगी का साम्राज्य था। चमड़े की बदबू आ रही थी। लंबे कद के पठान अलमस्त चाल से घूम रहे थे। लेखक किसी होटल की तलाश में था।

हामिद के होटल में–लेखक को तलाशते-तलाशते एक होटल मिला। एक अधेड़ पठान अँगीठी के पास सिर झुकाए चपातियाँ बना रहा था। वह लेखक को तीखी नजरों से देखने लगा। लेखक के मुसकराने पर भी वह नहीं मुसकराया। लेखक ने पूछा–खाने को कुछ मिलेगा?

पठान ने बेंच पर बैठने का इशारा करके कहा–'चपाती और सालन है।' थोड़ी देर बाद पठान ने लेखक का परिचय पूछा। उसे हिंदू जानकर उसने पूछा–वह हिंदू होकर एक मुसलमान के होटल में खाना कैसे खाएगा। लेखक ने बताया कि वह हिंदुस्तान में मद्रास के आगे मालाबार नामक स्थान पर रहता है। उनके यहाँ हिंदू-मुसलमान का कोई भेद नहीं है। वे बढ़िया चाय और पुलाव खाने के लिए हमेशा मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। मुसलमानों की भारत में बनी पहली मसजिद भी उन्हीं के एक राज्य में है। उनके यहाँ हिंदू-मुसलिम दंगे भी न के बराबर होते हैं।

हामिद का दुख–हामिद लेखक की बातों पर विश्वास न कर सका। बोला–काश! मैं आपके मुल्क में जाकर अपनी आँखों से यह सब देख सकता। हामिद ने दुखपूर्वक कहा–पाकिस्तान के हिंदू ऐसी बातें फख्र के साथ किसी मुसलमान से नहीं कह सकते। वे मुसलमानों को अत्याचारियों की संतान मानते हैं। इसलिए पाकिस्तान में रहकर उन्हें अपने सम्मान को बचाना कठिन हो जाता है।

प्रेमपूर्ण भोजन–हामिद ने अपने नौकर अब्दुल को ज़ोर की आवाज़ लगाई। उसने पश्तो भाषा में लेखक के लिए खाना बनाने का आदेश दिया। हामिद बोला–"आप मुहब्बत और ईमानदारी से मेरे होटल में खाना खाने आए हैं। इस बात का मेरे दिल पर गहरा असर है। अगर सभी हिंदू और मुसलमान आपस में मुहब्बत करते तो कितना अच्छा होता!"

भोजन आया। थाली में चावल, चपातियाँ और सालन लगे थे। लेखक ने बड़े चाव से खाना खाया। उसके बाद उसने पैसे निकाले किंतु हामिद ने लेखक का हाथ रोक लिया। बोला–आप मेरे मेहमान हैं। आपसे पैसे नहीं लूँगा। लेखक ने कहा–एक दुकानदार के नाते आपको पैसे लेने पड़ेंगे। यह कहकर उसने एक रुपये का नोट हामिद की ओर बढ़ा दिया।

हामिद का पैसे लौटाना–हामिद ने लेखक का मन रखने के लिए उससे एक रुपये का नोट ले लिया। परंतु उस नोट को फिर से लेखक की हथेली पर रखकर कहा–*"मैं चाहता हूँ कि यह आप ही के हाथों में रहे। आप जब पहुँचें तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इस पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें।"*

लेखक भावविभोर हो गया। उसके बाद वह तक्षशिला के खंडहर देखने चला गया। आज भी हामिद के प्रेम की याद उसके दिल में ताज़ा है। आज जब उसने यह समाचार सुना कि तक्षशिला में भीषण सांप्रदायिक दंगा हुआ है, तो उसने मन-ही-मन प्रभु से प्रार्थना की कि भगवान दंगे की चिंगारियों से उसके हामिद भाई को सुरक्षित रखे।

***- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-**

-1लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

-1हामिद पाकिस्तानी मुसलमान था। वह तक्षशिला के पास एक गाँव में होटल चलाता था। लेखक तक्षशिला के खंडहर देखने के लिए पाकिस्तान आया तो हामिद के होटल पर खाना खाने पहुँचा। वहीं उनका आपस में परिचय हुआ।

-2काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता।-'हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

-2हामिद ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वहाँ हिंदू मुसलमानों-को आततताइयों की औलाद समझते हैं।वहाँ सांप्रदायिक सौहार्द्र की कमी के कारण आए दिन हिंदू मुसलमानों के बीच दंगे होते रहे हैं।-इसके विपरीत भारत में हिंदू मुसलमान सौहार्द से मिलजुलकर रहते हैं। ऐसी बातें हामिद के लिए सपने जैसी थी।-

3-हामिद को लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?

3-हामिद को लेखक की भेदभाव रहित बातों पर विश्वास नहीं हुआ। लेखक ने हामिद को बताया कि उनके प्रदेश में हिंदू-मुसलमान बड़े प्रेम से रहते हैं। वहाँ के हिंदू बढ़िया चाय या पुलावों का स्वाद लेने के लिए मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। पाकिस्तान में ऐसा होना संभव नहीं था। वहाँ के हिंदू मुसलमानों को अत्याचारी मानकर उनसे घृणा करते थे। इसलिए हामिद को लेखक की बातों पर विश्वास न हो सका।

4-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इंकार क्यों किया?

4-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इसलिए इंकार कर दिया, क्योंकि-

वह भारत से पाकिस्तान गए लेखक को अपना मेहमान मान रहा था।

हिंदू होकर भी लेखक मुसलमान के ढाबे पर खाना खाने गया था।

लेखक मुसलमानों को आततताइयों की औलाद नहीं मानता था।

लेखक की सौहार्द भरी बातों से हामिद खाँ बहुत प्रभावित था।

लेखक की मेहमाननवाजी करके हामिद 'अतिथि देवो भव' की परंपरा का निर्वाह करना चाहता था।

5-मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के परस्पर संबंधों को अपने शब्दों में लिखिए।

5-मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के आपसी संबंध बहुत घनिष्ठ हैं। हिंदूजन मुसलमानों के होटलों में खूब खान-पान करते हैं। वे आपस में मिल जुलकर रहते हैं। भारत में मुसलमानों द्वारा बनाई गई पहली मसजिद उन्हीं के राज्य में है। फिर भी वहाँ सांप्रदायिक दंगे बहुत कम होते हैं।

6-तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक के मन में कौन-सा विचार कौंधा? इससे लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है?

6-तक्षशिला में आगजनी की खबर सुनकर लेखक के मन में हामिद खाँ और उसकी दुकान के आगजनी से प्रभावित होने का विचार कौंधा। वह सोच रहा था कि कहीं हामिद की दुकान इस आगजनी का शिकार न हो गई हो। वह हामिद की सलामती की प्रार्थना करने लगा। इससे लेखक के कृतज्ञ होने, हिंदू-मुसलमानों को समान समझने की मानवीय भावना रखने वाले स्वभाव का पता चलता है।

*-प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

1-लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

1-एक बार गर्मियों में लेखक तक्षशिला के खंडहर देखने गया था। गर्मी के कारण लेखक का भूख प्यास से बुरा हाल था। खाने की तलाश में वह रेलवे स्टेशन से आगे बसे गाँव की ओर चला गया। वहाँ तंग और गंदी गलियों से भरा बाज़ार था, वहाँ पर खाने पीने का कोई होटल या दुकान नहीं दिखाई दे रही थी और लेखक भूख प्यास से परेशान था। तभी एक दुकान पर रोटियाँ सेंकी जा रही थीं जिसकी खुशबू से लेखक की भूख और बढ़ गई। वह दुकान में चला गया और खाने के लिए माँगा। वहीं हामिद खाँ से परिचय हुआ। हामिद खाँ से बातचीत के समय एक दूसरे की भावना का पता चला और प्रेम से वशीभूत होकर एक दूसरे के अच्छे मित्र बन गए।

2-काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता। हामिद ने 'ऐसा क्यों कहा?

2-हामिद खाँ को पता चला कि लेखक हिंदू है तो हामिद ने पूछा क्या वह मुसलमानी होटल में खाएँगे। तब – लेखक ने बताया कि हिंदुस्तान में हिंदू–मुसलमान में कोई भेद नहीं होता है। अच्छा पुलाव खाने के लिए वे मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। पहला मस्जिद कोडुंगल्लूर हिंदुस्तान में ही बना। वहाँ हिंदू–मुसलमानों के बीच दंगे नहीं होते। सब बराबर हैं। हामिद को एकदम विश्वास नहीं हुआ लेकिन लेखक के कहने में उसे सच्चाई नज़र आई। वह ऐसी जगह को स्वयं देखकर तसल्ली करना चाहता था।

3-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इंकार क्यों किया?

3-हामिद खाँ को गर्व था कि एक हिंदू ने उनके होटल में खाना खाया। साथ ही वह लेखक को मेहमान भी मान रहा था। वह आने वाले के शहर की हिंदू–मुस्लिम एकता का भी कायल हो गया था। इसलिए हामिद खाँ ने खाने के पैसे नहीं लिए।

4-सांप्रदायिक दंगों की खबर पढ़कर लेखक कौन-सी प्रार्थना करने लगा?

4-सांप्रदायिक दंगों की खबर पढ़कर लेखक को हामिद और उसकी दुकान की याद हो आई। वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, "हे भगवान! मेरे हामिद खाँ की दुकान को इस आगजनी से बचा लेना।

5-हामिद खाँ की दुकान का चित्रण कीजिए।

5-हामिद खाँ की दुकान तक्षशिला रेलवे स्टेशन से पौन मील दूरी पर एक गाँव के तंग बाज़ार में थी। उसकी दुकान का आँगन बेतरतीबी से लीपा था तथा दीवारें धूल से सनी थीं। अंदर चारपाई पर हामिद के अब्बा हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। दुकान में ग्राहकों के लिए कुछ बेंच भी पड़े थे।

6-लेखक को हामिद की याद बनी रहे, इसके लिए उसने क्या तरीका अपनाया?

6-भारत जाने पर भी लेखक को हामिद की याद आए, इसके लिए उसने लेखक को भोजन के बदले दिया गया रुपया वापस करते हुए कहा, 'मैं चाहता हूँ कि यह आपके ही हाथों में रहे। जब आप पहुँचे तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इसे पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें।"

7-'तक्षशिला और मालाबार के लोगों में सांप्रदायिक सद्भाव में क्या अंतर है'? हामिद खाँ पाठ के आधार पर लिखिए।
7-तक्षशिला के लोगों में सांप्रदायिकता का बोलबाला था। वहाँ हिंदू और मुसलमान परस्पर शक की निगाह से देखते हैं और एक-दूसरे को मारने-काटने के लिए दंगे और आगजनी करते हैं। इसके विपरीत मालाबार में हिंदू-मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव है। वे मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ नहीं के बराबर दंगे होते हैं।

8-हामिद के भारत आने पर आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते?
8-हामिद के भारत आने पर मैं उसका गर्मजोशी से स्वागत करता। उससे तक्षशिला के सांप्रदायिक वातावरण में आए बदलावों के बारे में पूछता, उसकी दुकान के बारे में पूछता। मैं हामिद को मालाबार के अलावा भारत के अन्य शहरों में ले जाता और हिंदू-मुस्लिम एकता के दर्शन कराता। मैं उसे अपने साथ हिंदू होटलों के अलावा मुस्लिम होटलों में भी खाना खिलाता। उसे हिंदू-मुसलमान दोनों धर्मों के लोगों से मिलवाता ताकि वह यहाँ के सांप्रदायिकता सौहार्द को स्वयं महसूस कर सके। मैं उसके साथ 'अतिथि देवो भव' परंपरा का पूर्ण निर्वाह करना।

9-हमें अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता है, यही हमारी नियति है। ऐसा किसने और क्यों कहा? उसके इस कथन का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?
9-लेखक तक्षशिला की एक सँकरी गली में खाने के लिए कोई ढाबा ढूँढ़ रहा था कि एक दुकान से चपातियों की सोंधी खुशबू आती महसूस हुई। वह दुकान के अंदर चला गया। बातचीत में चपातियाँ सेंकने वाले हामिद ने पूछा, क्या आप हिंदू हैं? लेखक के हाँ कहने पर उसने पूछा आप हिंदू होकर भी मुसलमान के ढाबे पर खाना खाने आए हैं, तो लेखक ने अपने देश हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सद्भाव के बारे में उसे बताया जबकि तक्षशिला में स्थिति ठीक विपरीत थी। वहाँ हामिद जैसों को आततायियों की औलाद माना जाता था। उन पर हमले किए-कराए जाते थे, इसलिए उसने कहा कि हमें अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता है। उसके इस कथन से लेखक दुखी हुआ।

10-हामिद कौन था? उसे लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?
10-हामिद तक्षशिला की सँकरी गलियों में ढाबा चलाने वाला अधेड़ उम्र का पठान था। वह अत्यंत संवेदनशील और विनम्र व्यक्ति था। तक्षशिला में उस जैसों को सांप्रदायिकता का शिकार होना पड़ता था। इससे बचने के लिए उसे आततायियों से लड़ना-झगड़ना पड़ता था। लेखक ने जब उसे बताया कि उसके यहाँ (मालाबार में) अच्छी चाय पीने और स्वादिष्ट बिरयानी खाने के लिए हिंदू भी मुसलमानों के ढाबे पर जाते हैं तथा हिंदू और मुसलमान परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। इसके अलावा भारत में पहली मस्जिद का निर्माण मुसलमानों ने उसके राज्य के एक स्थान कोंडुगल्लूर में किया था तथा उसके यहाँ हिंदू-मुसलमानों के बीच दंगे नहीं के बराबर होते हैं, तो यह सब सुनकर हामिद को विश्वास नहीं हो रहा था।

==========

संचयन -पाठ-6

दीये जल उठे

दिए जल उठे' कहानी आज़ादी के लिए प्रयत्नशील भारत की महत्वपूर्ण घटना पर आधारित है। जब वल्लभभाई पटेल के आह्वान पर पूरा भारत 'दांडी कूच' के लिए तैयार था। इस कूच को असफल बनाने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने उनको तीन महीने के कारावास में डाल दिया। गांधी जी को वल्लभभाई पटेल की इस तरह से हूई गिरफ्तारी अच्छी नहीं लगी और उन्होंने स्वयं इस यात्रा का नेतृत्व किया। यह यात्रा साबरमती से आरंभ हूई। गांधी जी बोरसद से होते हूए रास गए वहाँ उन्होंने जनता का आह्वान किया। वहाँ से वह कनकापुरा पहूँचे। इस दांडी कूच का उद्देश्य था लोगों के अंदर आजादी के लिए जोश पैदा करना, सत्याग्रह के जनता को तैयार करना व बिटिश शासन से पूर्णस्वराज की माँग करना। कनकापुरा से नदी आधी रात में पार करनी थी लेकिन आधी रात में अंधेरा इतना गहरा था की कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। तभी गांधीजी व आज़ादी के अन्य सिपाहियों का उत्साह बढ़ाने के लिए नदी के तट पर दोनों ओर हजारों दिए जल उठे। हजारों लोग हाथों में दिए लेकर खड़े हो गए ताकि लोगों को नदी पार करने में कोई परेशानी न हो। यह कहानी उस एकता का साक्ष्य है जो आज़ादी के समय में थी। लोगों का एक ही उद्देश्य था, भारत को गुलामी के बंधन से मुक्त करवाना और अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ना।

1: किस कारण से प्रेरित हो स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया?

उत्तर: वहाँ पर निषेधाज्ञा लागू थी और इसलिए कोई भी सभा करना मना था। पटेल ने निषेधाज्ञा तोड़ी थी। इसलिए स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

2: जज को पटेल की सजा के लिए आठ लाइन के फैसले को लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा? स्पष्ट करें।

उत्तर: जब पटेल को जज के सामने पेश किया गया तो उन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया। जज की समझ में नहीं आ रहा था कि पटेल को किस धारा के अंतर्गत सजा सुनाई जाए। इसी उधेड़बुन में जज को फैसला लिखने में डेढ़ घंटा लग गया।

3: "मैं चलता हूँ। अब आपकी बारी है।" - यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धत पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पाठ में जिस आंदोलन की बात की गई है, वह एक बहुत ही बड़ा आंदोलन था। कोई भी बड़ा आंदोलन केवल एक व्यक्ति द्वारा संपन्न नहीं होता है। इस काम में हजारों, लाखों लोगों के मेहनत की आवश्यकता होती है। पटेल उस आंदोलन के एक मुख्य नेता थे लेकिन उनकी गिरफ्तारी से वह आंदोलन रुकने वाला नहीं था। पटेल

को पता था कि उनकी अनुपस्थिति में गांधीजी समेत बाकी नेता और कार्यकर्ता उस आंदोलन को आगे बढ़ाएँगे। इसलिए पटेल ने ऐसा कहा।

4: "इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें" - गांधीजी ने यह कथन किसके लिए और किस संदर्भ में कहा?

उत्तर: गांधीजी ने यह बात दरबार समुदाय के लोगों के बारे में कही थी। दरबार लोग रियासती होते थे। उनका जीवन ऐशो आराम में कटता था। फिर भी वे सबकुछ छोड़कर रास में रहने के लिए चले आये थे। इसलिए गांधीजी ने ऐसा कहा।

5: पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि - "कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है।" अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: माही नदी को पार करने में कई दिक्कतें थीं। उस नदी को रात में पार करने का विचार किया गया ताकि पानी का स्तर ऊँचा हो और कीचड़ में न चलना पड़े। रात के घुप्प अंधेरे में कमजोर दियों की कोई औकात नहीं थी। लोगों ने हजारों दिये जला लिए जिससे काम भर की रोशनी हो गई। उसी रोशनी में गांधीजी समेत अन्य लोगों ने नदी पार किया। स्मरण रहे कि उस जमाने में वहाँ पर कोई बिजली या जनरेटर नहीं था। यह प्रकरण दिखाता है कि तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से कठिन परिस्थिति का भी सामना किया जा सकता है।

6: महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर: महिसागर नदी के दोनों ओर का रास्ता बड़ा ही दुर्गम था क्योंकि वहाँ कीचड़ से होकर गुजरना पड़ता था। घुप्प अंधेरा छाया हुआ था। लेकिन लगभग हर व्यक्ति के हाथ में एक-एक दिया था जिससे झिलमिल रोशनी की कतारें नजर आ रहीं थीं। लगता था कि मार्च के महीने में ही नदी के दोनों किनारों पर दिवाली मनाई जा रही हो। उस रात के अंधेरे में भी हजारों लोगों के कोलाहल से उनका उत्साह साफ मालूम हो रहा था।

7: "यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।" - गांधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है?

उत्तर: गांधीजी अपनी धुन के पक्के व्यक्ति थे। वे एक बार किसी काम पर लग जाते थे तो उसे तब तक करते रहते थे जब तक कि उनका काम पूरा न हो जाए। इस बीच आने वाली हर कठिनाई का सामना करने के लिए वे तैयार रहते थे। वह कार्यकर्ताओं और जनता के साथ रहकर उनके जैसी परिस्थितियों का सामना करने को तैयार रहते थे।

8: गांधी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे। फिर भी उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए?

उत्तर: ब्रिटिश अधिकारी इस बात से आश्वस्त थे कि गांधी को जो भी करना होगा वह तय कार्यक्रम के अनुसार ही करेंगे। फिर भी रास्ते में कई ऐसे स्थान पड़ते थे जहाँ आसानी से नमक बनाया जा सकता था। उन्हें शायद इस बात का डर रहा होगा कि गांधीजी कहीं जनता के दबाव में आकर तय समय से पहले ही नमक बना दें। इसलिए ब्रिटिश अधिकारी कोई खतरा नहीं उठाना चाहते थे।

9: गांधीजी के पार उतरने पर भी लोग नदी तट पर क्यों खड़े रहे?

उत्तर: गांधीजी के पार उतरने के बाद भी कई सत्याग्रहियों को नदी पार करना बाकी था। और लोगों के भी आने की संभावना थी। इसलिए गांधीजी के पार उतरने के बाद भी लोग नदी तट पर खड़े रहे।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.गांधी जी और पटेल की मुलाकात आश्रम के सामने सड़क पर क्यों हुई?
उत्तर-सरदार पटेल को बोरसद की अदालत में 500 रुपए जुर्माने के साथ तीन महीने की जेल की सजा हुई। इसके लिए उन्हें अहमदाबाद की साबरमती जेल में लाया जा रहा था। जेल का रास्ता आश्रम से होकर जाता था। गांधी जी उनसे मिलने आश्रम से बाहर सड़क पर आ गए थे, जहाँ दोनों नेताओं की मुलाकात हुई।

प्रश्न 2.रास में गांधी जी ने लोगों से सरकारी नौकरी के संबंध में क्या आह्वान किया?
उत्तर-रास में गांधी जी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पटेल को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। ऐसे में कुछ मुखी और तलाटी अब भी सरकारी नौकरी से चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफा दे देना चाहिए।

प्रश्न 3.नदी पार करने के लिए सत्याग्रहियों ने रात दस बजे के बाद का समय क्यों चुना?
उत्तर-मही नदी के दोनों ओर दूर-दूर तक दलदल और कीचड़ था। इसी कीचड़ एवं दलदल में कई किलोमीटर पैदल चलकर नाव तक पहुँचना था। रात बारह बजे समुद्र का पानी नदी में चढ़ आता है जिससे कीचड़ एवं दलदल पर पानी भर जाता है और नाव चलने योग्य हो जाती है।

प्रश्न 4.रघुनाथ काका ने सत्याग्रहियों की मदद किस तरह की?
उत्तर-रघुनाथ काका ने गांधी जी एवं अन्य सत्याग्रहियों को नदी पार कराने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। वे एक नई नाव खरीदकर कनकापुरा पहुँच गए। गांधी जी उस नाव पर सत्याग्रहियों के साथ सवार हुए और रघुनाथ काका नाव चलाते हुए दूसरे किनारे पर ले गए।

प्रश्न 5.सरदार पटेल की गिरफ्तारी पर देश में क्या-क्या प्रतिक्रिया हुई ?
उत्तर-रास में मजिस्ट्रेट द्वारा निषेधाज्ञा लगवाकर गिरफ्तार करवाने से देश में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध तरह-तरह

की प्रतिक्रियाएँ हुईं। मदनमोहन मालवीय ने केंद्रीय असेंबली में प्रस्ताव पेश किया, जिसमें पटेल पर मुकदमा चलाए बिना जेल भेज देने की निंदा की गई। इसी प्रस्ताव के संबंध में मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि सरदार बल्लभ भाई की गिरफ्तारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांत पर है। गांधी जी भी पटेल की इस तरह की गिरफ्तारी से बहुत क्षुब्ध थे।

प्रश्न 6.महिसागर के दूसरे तट की स्थिति कैसी थी? 'दिये जल उठे' पाठ के आधार पर लिखिए।
उत्तर-महिसागर के दूसरे तट की स्थिति भी पहले तट के जैसी ही थी। यहाँ की जमीन भी दलदली और कीचडयुक्त थी। यहाँ भी गांधी जी को करीब डेढ़ किलोमीटर तक पानी और कीचड़ में चलकर किनारे पहुँचना पड़ा। यहाँ भी गांधी जी के विश्राम के लिए झोपड़ी पहले से तैयार कर दी गई थी।

प्रश्न 7.गांधी जी के प्रति ब्रिटिश हुक्मरान किस तरह की राय रखते थे?
उत्तर-गांधी जी के प्रति ब्रिटिश हुक्मरान दो प्रकार की राय रखते थे। इनमें से एक वर्ग को ऐसा लगता था कि गांधी जी अचानक नमक बनाकर कानून तोड़ देंगे, जबकि गांधी जी को निकट से जानने वाले अधिकारी इस बात से सहमत न थे। उनका मानना था कि गांधी जी इस तरह कोई काम चुपके से नहीं करेंगे।

प्रश्न 8.कनकापुरा में गांधी जी की सभा के बाद आगे की यात्रा में परिवर्तन क्यों कर दिया गया?
उत्तर-कनकापुरा में गांधी जी की सभा के बाद आगे की यात्रा में इसलिए परिवर्तन कर दिया गया क्योंकि नदी में आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ आता था। इससे कीचड़ और दलदल में कम चलना पड़ता। इसके विपरीत नदी में पानी कम होने पर नाव तक पहुँचने के लिए ज्यादा दूरी कीचड़ और दलदल में तय करनी पड़ती।

प्रश्न 9.महिसागर नदी का किनारा उस दिन अन्य दिनों से किस तरह भिन्न था? इस अद्भुत दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर-गांधीजी और अन्य सत्याग्रही पानी चढ़ने का इंतजार कर रहे थे। रात बारह बजे महिसागर नदी का किनारा भर गया, गांधीजी झोपड़ी से बाहर आए और घुटनों तक पानी में चलकर नाव तक पहुँचे। इसी बीच महात्मागांधी की जय, नेहरु जी की जय, सरदार पटेल की जय के नारों के बीच नाव रवाना हुई । इसे रघुनाथ काका चला रहे थे। कुछ ही देर में नदी के दूसरे किनारे से भी ऐसी ही आवाज़ गूंजने लगी।

प्रश्न 10.कनकापुरा की जनसभा में गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार के बारे में क्या कहा?
उत्तर-कनकापुरा की जनसभा में गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार और उसके कुशासन के बारे में यह कहा कि इस राज में रंक से राजा तक सभी दुखी हैं। राजे-महाराजे भी उसी तरह नाचने को तैयार हैं, जैसे सरकार नचाती है। यह राक्षसी राज है। इसका संहार करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं और किन मानवीय मूल्यों के कारण गांधी जी देशभर में लोकप्रिय हो गए थे?
उत्तर-गांधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। वे झूठ एवं छल का सहारा लेकर कोई काम नहीं करते थे। उनकी इस चारित्रिक विशेषता को भारतीय ही नहीं अंग्रेज़ भी समझते थे। इसके अलावा गांधी जी अपने आराम के लिए दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहते थे। स्वाधीनता की लड़ाई को वे धार्मिक कार्य मानकर निष्ठा, लगन, ईमानदारी से कर रहे थे। उनके उदार स्वभाव, दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति और सेवा भावना ने उन्हें देशभर में लोकप्रिय बना दिया। अपने नेतृत्व क्षमता के कारण वे स्वाधीनता आंदोलन के अगुआ थे। उनके एक आह्वान पर देश उनके पीछे चल देता था। इस प्रकार कार्य के प्रति समर्पण, उदारता, परोपकारिता, सत्यवादिता आदि मानवीय मूल्यों के कारण वे देशभर में लोकप्रिय हो गए थे।

प्रश्न 2.सरदार पटेल के चरित्र से आप किन-किन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?
उत्तर-सरदार बल्लभ भाई पटेल देश को आजादी दिलाने वाले नेताओं में प्रमुख स्थान रखते थे। वे अत्यंत जुझारू प्रवृत्ति के नेता थे। त्याग, साहस, निष्ठा, ईमानदारी जैसे मानवीय मूल्य उनमें कूट-कूटकर भरे थे। उनमें गजब की नेतृत्व क्षमता थी। उनके चरित्र से मैं नि:स्वार्थ भाव से काम करने की प्रवृत्ति, कार्य के प्रति समर्पण, साहस, ईमानदारी और कार्य के प्रति जुझारूपन दिखाने जैसे मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहूँगा। मैं अपने राष्ट्र के लिए उनके समान तन-मन और धन त्यागने का गुण एवं साहस बनाए रखना चाहूँगा। दिये जल उठे

प्रश्न 3.पटेल और गांधी जी जैसे नेताओं ने देश के लिए अपना चैन तक त्याग दिया था। आप अपने देश के लिए क्या करना चाहेंगे?
उत्तर-गांधी और पटेल अत्यंत उच्च कोटि के देशभक्त एवं नेता था। उनके जैसा त्याग करना सामान्य आदमी के बस की बात नहीं। उनमें नि:स्वार्थ काम करने की जन्मजात भावना थी। उन्हीं लोगों से प्रेरित होकर मैं अपने देश के लिए निम्नलिखित कार्य करना चाहूँगा-

- मैं अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दूंगा।
- अपने देश से प्रेम और सच्चा लगाव रबँगा।
- अपने देश की बुराई भूलकर भी नहीं करूंगा, न सुनूंगा।
- देश को साफ़-सुथरा बनाने का प्रयास करूंगा।
- देश की समस्याओं के समाधान में अपना योगदान दूंगा।
- देश की उन्नति एवं शान बढ़ाने वाले काम करूंगा।

प्रश्न 4.नेहरू जी गांधी जी से कब मिलना चाहते थे? इस पर गांधी जी ने क्या कहा?
उत्तर-नेहरू जी 21 मार्च को होने वाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक से पहले गांधी जी से मिलना चाहते थे। इस पर गांधी जी ने कहा कि उन तक पहुँचना कठिन है। तुमको पूरी एक रात का जागरण करना पड़ेगा। अगर कल रात से। पहले वापस लौटना चाहते हो, तो इससे बचा भी नहीं जा सकता। मैं उस समय जहाँ भी रहूँगा, संदेशवाहक तुमको वहाँ तक ले आएगा। इस प्रयाण की कठिनतम घड़ी में तुम मुझसे मिल रहे हो। तुमको रात के लगभग दो बजे जाने-परखे मछुआरों के कंधों पर बैठकर एक धारा पार करनी पड़ेगी। मैं राष्ट्र के प्रमुख सेवक के लिए भी प्रयाण में जरा भी विराम नहीं दे सकता।

प्रश्न 5.रास की जनसभा में गांधी जी ने लोगों को किस तरह स्वतंत्रता के प्रति सचेत किया?
उत्तर-रास की आबादी करीब तीन हज़ार थी, लेकिन उनकी जनसभा में बीस हजार से ज्यादा लोग थे। अपने भाषण में गांधी ने पटेल की गिरफ़्तारी का जिक्र करते हुए कहा, "सरदार को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े का उल्लेख किया और कहा कि कुछ मुखी और तलाटी 'गंदगी पर मक्खी की तरह' चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफा दे देना चाहिए।" उन्होंने कहा, "आप लोग कब तक गाँवों को चूसने में अपना योगदान देते रहेंगे। सरकार ने जो लूट मचा रखी है उसकी ओर से क्या अभी तक आपकी आँखें खुली
नहीं हैं?"

प्रश्न 6.रासे में गांधी जी को किस तरह स्वागत हुआ? उन्होंने रास में रहने वाले दरबारों का उदाहरण किस संदर्भ में दिया?
उत्तर-रास में गांधी का भव्य स्वागत हुआ। दरबार समुदाय के लोग इसमें सबसे आगे थे। दरबार गोपालदास और रविशंकर महाराज वहाँ मौजूद थे। गांधी ने अपने भाषण में दरबारों को खासतौर पर उल्लेख किया। कुछ दरबार रास में रहते हैं, पर उनकी मुख्य बस्ती कनकापुरा और उससे सटे गाँव देवण में है। दरबार लोग रियासतदार होते थे। उनकी साहबी थी, ऐशो-आराम की ज़िंगदी थी, एक तरह का राजपाट था। दरबार सब कुछ छोड़कर यहाँ आकर बस गए। गांधी ने कहा, "इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें।"

व्याकरण भाग :-

1-विराम चिन्ह:-

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न

(1) अल्प विराम)Comma)(,)

(2) अर्द्ध विराम)Semi colon) (;)

(3) पूर्ण विराम)Full-Stop) (। (

(4) उप विराम)Colon) [:]

(5) विस्मयादिबोधक चिह्न)Sign of Interjection)(!)

(6) प्रश्नवाचक चिह्न)Question mark) (?)

(7) कोष्ठक)Bracket) (())

(8) योजक चिह्न)Hyphen) (-)

(9) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न)Inverted Comma) ("... ")

(10) लाघव चिह्न)Abbreviation sign) (o)

(11) आदेश चिह्न)Sign of following) (:-)

(12) रेखांकन चिह्न)Underline) (_)

(13) लोप चिह्न)Mark of Omission)(...)

*-निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दोबारा लिखिए|

1. लोगों ने मिस्टर शर्मा को एम पी चुन लिया
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
3. क्या प्रधानाचार्य आज नहीं आए हैं
4. तुलसी ने रामचरित मानस में लिखा है परहित सरसि धर्म नहिं भाई
5. तुम कौन हो कहाँ रहते हो क्या करते हो यह सब मैं क्यों पूछू
6. बूढ़े ने डॉक्टर चड्ढा से कहा इसे एक नज़र देख लीजिए शायद बच जाए
7. कामायनी कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे कई महान कवि आए थे
9. वसंत ऋतु के त्योहार होली वसंत पंचमी वैसाखी हमें उल्लास से भर जाते हैं
10. हाय फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी
11. क्या कहा तुम अनुत्तीर्ण हो गए

12. रोहन 125 राजौरी गार्डन दिल्ली में रहता है
13. यह पत्र 25 जुलाई 2014 को लिखा गया है

उत्तर-

1. लोगों ने मि. शर्मा को एम.पी. चुन लिया है।
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा, "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"
3. "क्या आज प्रधानाचार्य नहीं आए हैं?"
4. तुलसी ने 'रामचरित मानस' में लिखा है-'परहित सरसि धर्म नहिं भाई'।
5. तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, क्या करते हो, यह सब मैं क्यों पूछू ?
6. बूढ़े ने डॉ. चड्ढा से कहा, "इसे एक नज़र देख लीजिए, शायद बच जाए।"
7. 'कामायनी' कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है।
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह 'दिनकर', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कई महान कवि आए थे।
9. वसंत ऋतु के त्योहार (होली, वसंत पंचमी, बैसाखी) हमें उल्लास से भर जाते हैं।
10. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।
11. क्या कहा, तुम अनुत्तीर्ण हो गए!
12. रोहन 125, राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहता है।
13. यह पत्र 25 जुलाई, 2014 को लिखा गया है।

*-निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दुबारा लिखिए
1-हिंदी कविता की सुंदर पंक्ति है जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए
2-नीचे को धूरि समान वेद वाक्य नहीं है
3-धूल धूलि धूली धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग अलग हैं
4-एक आदमी ने घृणा से कहा क्या ज़माना है जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है
5-दूसरे साहब कह रहे थे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है
6-कल जिसका बेटा चल बसा आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है हाय रे पत्थर-दिल
7-कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे क्या तुम भयभीत थीं
8-नहीं मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया
9-तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री
10-साउथ कोल पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर जगह के नाम से प्रसिद्ध है
11-चलो चलते हैं मैंने कहा
12-गांधी जी कहते थे-महादेव के लिखे नोट के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न
13-रामन ने बी ए और एम ए दोनों ही परीक्षाओं में काफी ऊँचे अंक हासिल किए

14-यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है कुछ और क्यों नहीं

संधि की परिभाषा:-

दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

सरल शब्दों में- दो शब्दों या शब्दांशों के मिलने से नया शब्द बनने पर उनके निकटवर्ती वर्णों में होने वाले परिवर्तन या विकार को संधि कहते हैं।

संधि के भेद:-

(1)स्वर संधि
(2)व्यंजन संधि
(3)विसर्ग संधि

(1)स्वर संधि- दो स्वरों से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते है।

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, सूर्य + उदय = सूर्योदय, मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र,
कवि + ईश्वर = कवीश्वर, महा + ईश = महेश

इनके पाँच भेद होते है -

(i)दीर्घ संधि
(ii)गुण संधि
(iii)वृद्धि संधि
(iv)यण संधि
(v)अयादी संधि

(i)दीर्घ संधि-

जब दो सवर्ण, ह्रस्व या दीर्घ, स्वरों का मेल होता है तो वे दीर्घ सवर्ण स्वर बन जाते हैं। इसे दीर्घ स्वर-संधि कहते हैं।

अ + अ= आ	अत्र + अभाव= अत्राभाव कोण + अर्क= कोणार्क
अ + आ= आ	शिव + आलय= शिवालय भोजन + आलय= भोजनालय
आ + अ= आ	विद्या + अर्थी= विद्यार्थी लज्जा + अभाव= लज्जाभाव

आ + आ= आ	विद्या + आलय= विद्यालय महा + आशय= महाशय
इ + इ= ई	गिरि + इन्द्र= गिरीन्द्र
इ + ई= ई	गिरि + ईश= गिरीश
ई + इ= ई	मही + इन्द्र= महीन्द्र
ई + ई= ई	पृथ्वी + ईश= पृथ्वीश
उ + उ= ऊ	भानु + उदय= भानूदय
ऊ + उ= ऊ	स्वयम्भू + उदय= स्वयम्भूदय
ऋ + ऋ= ऋ	पितृ + ऋण= पितृण

(ii) गुण संधि- अ, आ के साथ इ, ई का मेल होने पर 'ए'; उ, ऊ का मेल होने पर 'ओ'; तथा ऋ का मेल होने पर 'अर्' हो जाने का नाम गुण संधि है।

अ + इ= ए	देव + इन्द्र= देवन्द्र
अ + ई= ए	देव + ईश= देवेश
आ + इ= ए	महा + इन्द्र= महेन्द्र
अ + उ= ओ	चन्द्र + उदय= चन्द्रोदय
अ + ऊ= ओ	समुद्र + ऊर्मि= समुद्रोर्मि
आ + उ= ओ	महा + उत्स्व= महोत्स्व
आ + ऊ= ओ	गंगा + ऊर्मि= गंगोर्मि
अ + ऋ= अर्	देव + ऋषि= देवर्षि

(iii) वृद्धि संधि- अ, आ का मेल ए, ऐ के साथ होने से 'ऐ' तथा ओ, औ के साथ होने से 'औ' में परिवर्तन को वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे-

अ + ए =ऐ	एक + एक =एकैक
अ + ऐ =ऐ	नव + ऐश्वर्य =नवैश्वर्य

आ + ए=ऐ	महा + ऐश्वर्य=महैश्वर्य सदा + एव =सदैव
अ + ओ =औ	परम + ओजस्वी =परमौजस्वी वन + ओषधि =वनौषधि
अ + औ =औ	परम + औषध =परमौषध
आ + ओ =औ	महा + ओजस्वी =महौजस्वी
आ + औ =औ	महा + औषध =महौषध

(iv) यण संधि- इ, ई, उ, ऊ या ऋ का मेल यदि असमान स्वर से होता है तो इ, ई को 'य'; उ, ऊ को 'व' और ऋ को 'र' हो जाता है। इसे यण संधि कहते हैं।
जैसे-

(क) इ + अ= य	यदि + अपि= यद्यपि
इ + आ= या	अति + आवश्यक= अत्यावश्यक
इ + उ= यु	अति + उत्तम= अत्युत्तम
इ + ऊ = यू	अति + उष्म= अत्यूष्म
(ख) उ + अ= व	अनु + आय= अन्वय
उ + आ= वा	मधु + आलय= मध्वालय
उ + ओ = वो	गुरु + ओदन= गुवौंदन
उ + औ= वौ	गुरु + औदार्य= गुवौंदार्य
उ + इ= वि	अनु + इत= अन्वित
उ + ए= वे	अनु + एषण= अन्वेषण
(ग) ऋ + आ= रा	पितृ + आदेश= पित्रादेश

(v) अयादि स्वर संधि- ए, ऐ तथा ओ, औ का मेल किसी अन्य स्वर के साथ होने से क्रमशः अय्, आय् तथा अव्, आव् होने को अयादि संधि कहते हैं।
जैसे-

ए + अ= य	ने + अन= नयन
ऐ + अ= य	गै + अक= गायक
ओ + अ= व	भो + अन= भवन
औ + उ= वु	भौ + उक= भावुक

(2)व्यंजन संधि (Combination of Consonants) :- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पत्र विकार को व्यंजन संधि कहते है।

दूसरे शब्दों में- एक व्यंजन के दूसरे व्यंजन या स्वर से मेल को व्यंजन-संधि कहते हैं।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ग के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है।

जैसे- अहम् + कार =अहंकार

पम् + चम =पंचम

सम् + गम =संगम

(2) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त्-द्' 'ल्' में बदल जाते है और 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के बाद 'ल्' हो जाता है।

जैसे- उत् + लास =उल्लास

महान् + लाभ =महांल्लाभ

(3) किसी वर्ग के पहले वर्ण ('क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प') का मेल किसी स्वर या वर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण या र ल व में से किसी वर्ण से हो तो वर्ण का पहला वर्ण स्वयं ही तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यथा-

दिक् + गज =दिग्गज (वर्ग के तीसरे वर्ण से संधि)

षट् + आनन =षडानन (किसी स्वर से संधि)

षट् + रिपु =षड्रिपु (र से संधि)

अन्य उदाहरण

जगत् + ईश =जगतदीश

तत् + अनुसार =तदनुसार

वाक् + दान =वाग्दान

दिक् + दर्शन =दिग्दर्शन

वाक् + जाल =वगजाल

अप् + इन्धन =अबिन्धन

तत् + रूप =तद्रूप

(4) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प', के बाद 'न' या 'म' आये, तो क्, च्, ट्, त्, प, अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे-

वाक्+मय =वाङ्मय

अप् +मय =अम्मय

षट्+मार्ग =षणमार्ग

जगत् +नाथ=जगन्नाथ

उत् +नति =उन्नति

षट् +मास =षण्मास

5) सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के योग में शकार और चवर्ग तथा षकार और टवर्ग के योग में षकार और टवर्ग हो जाता है। जैसे-

स्+श	रामस् रामश्शेते= शेते+
त्+च	सत् सच्चित्= चित्+
त्+छ	महत् महच्छत्र= छात्र+
त् +ण	महत् महण्णकार= णकार+
ष्+त	द्रष् द्रष्टा= ता+
त्+ट	बृहत् बृहट्टिभ=टिट्टिभ+

(6) यदि वर्गों के अन्तिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह' आये, तो 'ह' पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह्' के पूर्ववाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण।

जैसे-

उत्+उद्धत= हत+

उत्+उद्धार= हार+

वाक् वाग्घरि= हरि+

(7) स्वर के साथ छ का मेल होने पर छ के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।

जैसे-

परि परिच्छेद =छेद +

शाला शालाच्छादन =छादन +

आ आच्छादन =छादन +

(8) त् या द् का मेल च या छ से होने पर त् या द् के स्थान पर च् होता है; ज या झ से होने पर ज्; ट या ठ से होने पर ट्; ड या ढ से होने पर ड् और ल होने पर ल् होता है।

उदाहरण-

जगत् जगच्छाया= छाया +

उत् उच्चारण= चारण +

सत् सज्जन= जन +

तत् तल्लीन= लीन +

(9) त् का मेल किसी स्वर, ग, घ, द, ध, ब, भ, र से होने पर त् के स्थान पर द् हो जाता है।

जैसे-

सत् सद= इच्छा +िच्छा

जगत् जगदीश= ईश +

तत् तद्रूप= रूप +

भगवत् भगवद् भक्ति= भक्ति +

(10) त् या द् का मेल श से होने पर त् या द् के स्थान पर च् और श के स्थान पर छ हो जाता है।

जैसे-

उत् उच्छवास= श्वास +

सत् सच्छास्त्र= शास्त्र +

(11) त् या द् का मेल ह से होने पर त् या द् के स्थान पर द् और ह से स्थान पर ध हो जाता है।

जैसे-

पद् पद्धति= हति +

उत् उद्धार= हार +

(12) म् का क से म तक किसी वर्ण से मेल होने पर म् के स्थान पर उस वर्ण वाले वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाएगा।

जैसे-

सम् सन्तुष्ट= तुष्ट +

सम् संयोग= योग +

(3)विसर्ग संधि)Combination Of Visarga) :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मेल से जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।

दूसरे शब्दों में- स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- विसर्ग के साथ (:)जब किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तो उसे विसर्गसंधि कहते हैं।-

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

जैसे-

मनः मनोरथ= रथ +

सरः सरोज= ज +

मनः मनोभाव= भाव +

पयः पयोद= द +

मनः मनोविकार = विकार +

पयः पयोधर= धर +

मनः मनोहर= हर +

वयः वयोवृद्ध= वृद्ध +

यशः यशोधरा= धरा +

सरः सरोवर= वर +

तेजः तेजोमय= मय +

यशः यशोदा= दा +

पुरः पुरोहित= हित +

मनः मनोयोग= योग +

(2) यदि विसर्ग के पहले इ या उ आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है।

जैसे-

निः निष्कपट= कपट +

निः निष्फल= फल +

निः निष्पाप= पाप +

दुः दुष्कर= कर +

(3) विसर्ग से पूर्व अ, आ तथा बाद में क, ख या प, फ हो तो कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे-

प्रातः प्रातःकाल =काल +

पयः पयःपान =पान +

अन्तः अन्तःकरण =करण +

अंतः अंतःपुर =पुर +

(4) यदि 'इ' - 'उ' के बाद विसर्ग हो और इसके बाद 'र' आये, तो 'इ' - 'उ' का 'ई' - 'ऊ' हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है।

जैसे-

निः नीरव= रव +

निः नीरस= रस +

निः नीरोग= रोग +

दुः दूराज= राज +

(5) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो, तो विसर्ग के स्थान में 'र्' हो जाता है। जैसे-

निः निरुपाय= उपाय +

निः निर्झर= झर +

निः निर्जल= जल +

निः निर्धन= धन +

दुः दुर्गन्ध= गन्ध +

निः निर्गुण= गुण +

निः निर्विकार= विकार +

दुः दुरात्मा= आत्मा +

दुः दुर्नीति= नीति +

निः निर्मल= मल +

(6) यदि विसर्ग के बाद 'चश-छ-' हो तो विसर्ग का 'श्', 'टष-ठ-' हो तो 'ष्' और 'तस-थ-' हो तो 'स्' हो जाता है।

जैसे-

निः निश्रय=चय +

निः निश्छल= छल +

निः निस्तार= तार +

निः निस्सार= सार +

निः निश्शेष= शेष +

निः निष्ष्ठीव= ष्ठीव +

(7) यदि विसर्ग के आगे पीछे-'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' हो जाता है और विसर्ग के बादवाले 'अ' का लोप होता है तथा उसके स्थान पर लुप्ताकार का चिह्न लगा दिया जाता है। (ऽ)

जैसे-

प्रथमः प्रथमोऽध्याय= अध्याय +

मनः मनोऽभिलषित= अभिलषित +

यशः यशोऽभिलाषी =अभिलाषी +

(8) विसर्ग से पहले आ को छोड़कर किसी अन्य स्वर के होने पर और विसर्ग के बाद र रहने पर विसर्ग लुप्त हो जाता है और यदि उससे पहले ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है।

जैसे-

निनीरस= रस + :

निनीरोग= रोग + :

(9) विसर्ग के बाद श, ष, स होने पर या तो विसर्ग यथावत् रहता है या अपने से आगे वाला वर्ण हो जाता है।

जैसे-

निनिःसंदेह अथवा निस्संदेह= संदेह + :

निनिःसहाय अथवा निस्सहाय= सहाय + :

शुद्ध-अशुद्ध वर्तनी :-

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अर्पण	अरपन	अनभिज्ञ	अनभिग्य
आहार	अहार	अस्वीकार	अश्वीकार
अपराह्न	अपरान्ह	अभिषेक	अभिसेक
अनुगृहीत	अनुग्रहीत	अधीन	आधीन

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अंतःकथा	अंतर्कथा	अनधिकार	अनाधिकार
अनुसरण	अनुशरण	आशीर्वाद	आर्शीवाद
अमावस्या	अमावश्या	अपह्नुति	अपन्हुति
अध्ययन	अध्यन	आर्द्र	आद्र
आतिथेय	आतिथे	आकांक्षा	अकांक्षा
अट्टालिका	आट्टालिका	आधिक्य	आधिक्यता
आवश्यक	अवश्यक	आच्छादन	आक्षादन
आध्यात्मिक	अध्यात्मिक	आजीविका	अजीविका
अद्वितीय	अदितीय	आमिष	अमिस
आराधना	अराधना	आशा	आसा
आषाढ़	असाढ़	श्मशान	श्यमशान
उज्ज्वल	उज्जवल	उल्लंघन	उलंघन
उत्पात	उतपात	उन्नति	उन्नती
उन्मीलित	उन्मिलित	ऊपर	उपर
ऐक्य	ऐक्यता	ऐश्वर्य	एश्वर्य
कुंअर	कुंवर	कौशल्या	कौसल्या
कृतकृत्य	कृत्यकृत्य	कृतघ्न	कृतघ्नी
करोड़	करोड	केन्द्रीकरण	केन्द्रीयकरण
क्यारी	कियारी	कृपा	क्रिपा
कीर्ति	कीर्ती	कृपया	कृप्या

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
कवयित्री	कवियित्री	कालिदास	कालीदास
कर्त्तव्य-पालन	कर्त्तव्यपालन	ईर्ष्या	ईर्षा
गायकी	गायिकी	गृहणी	ग्रहणी
गायें	गौवें	गरुड़	गरुण
गरिष्ठ	गरिष्ट	गृहस्थ	ग्रहस्थ
गर्मी	गरमी	चंचल	चन्चल
क्षत्रिय	क्षत्रीत	क्षमा	छमा
क्षेम	छेम	ज्योत्स्ना	ज्योत्सना
जामाता	जमाता	जागृति	जाग्रति
जगज्जननी	जगत जननी	तालाब	तलाब
त्याज्य	त्यज्य	तरुच्छाया	तरुछाया
तात्कालिक	तत्कालिक	त्रिकाल	तृकाल
तलाशी	तलासी	त्रिगुण	त्रगुन
तिलांजलि	तिलांजली	दरिद्रता	दारिद्रता
दाँत	दांत	देशनिकाला	देश-निकाला
दयालु	दयालू	दुरवस्था	दुरावस्था
द्रष्टव्य	दृष्टव्य	दृश्य	दृष्य
दोष	दोश	दृग	द्रग
धनुष	धनुश	निवारण	निवारन
निर्वाण	निरवान	निश्चेष्ट	निश्चेष्ठ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
नारायण	नरायन	नवाब	नबाब
निरपराध	निरापराध	नाराज	नराज
नारी	नारि	निरोग	निरोग्य
पतित	पतीत	पुष्पावली	पुष्पावलि
प्रेयसी	प्रेयसि	प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी
प्रतिज्ञा	प्रतीज्ञा	प्रसन्न	प्रशन्न
पुरस्कार	पुरुस्कार	पोषक	पोसक
पद्मिनी	पदमिनी	परिच्छेद	परिछेद
पृष्ठ	पृष्ट	पयःपान	पयापन
पितृभक्ति	पिताभक्ति	पैतृक	पैत्रिक
पौरुष	पौरुश	परिषद	परिसद
पुल्लिंग	पुलिंग	पिशाची	पिशाचिनी
प्रादेशिक	प्रदेशिक	प्राप्ति	प्राप्ती
प्रामाणिक	प्रमाणिक	प्रणाम	प्रनाम
प्रज्वलित	प्रज्ज्वलित	प्रतिच्छाया	प्रतिछाया
प्रशंसा	प्रसंसा	वृक्ष	बृक्ष
विराजमान	विराज्यमान	वाल्मीकि	वाल्मीकी
विरहिणी	विरहणी	वाहिनी	वाहनी
विधि	विधी	व्याप्त	व्यापित
बहुलता	बहुल्यता	विश्लेषण	विस्लेषण

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
बहिष्कार	बाहिष्कार	विशेष	विशेस
भस्मीभूत	भस्मिभूत	भवसागर	भौसागर
माहात्म्य	महात्म	मृत्युञ्जय	मृत्युन्जय
माननीय	मान्यनीय	मनोज्ञ	मनोग्य
मेहनत	मेनहत	मंत्रिमंडल	मंत्रीमंडल
मिट्टी	मट्टी	महायज्ञ	महाज्ञ
योद्धा	योधा	यश	यस
यशोलाभ	यशलाभ	यशस्वी	यसस्वी
राजनीतिक	राजनैतिक	राजगण	राजागण
ऋतु	ऋतू	राजर्षि	राजऋषि
ऋण	रिण	विरहिणी	विरहणी
विस्मृत	विसमृत	विदेह	वीदेह
विकास	विकाश	विषम	विसम
वेश	वेष	व्यावहारिक	व्यवहारिक
शिरःपीड़ा	शिरोपीड़ा	शशि	शशी
शताब्दी	शताब्दि	शान्तिमय	शांतमय
साप्ताहिक	सप्ताहिक	संन्यास	सन्यास
स्वास्थ्य	स्वस्थ	साम्य	साम्यता
सम्मुख	सन्मुख	संगृहीत	संग्रहीत
सर्वस्व	सर्वश्व	हतबुद्धि	हतोबुद्धि

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
हिरण्यकशिपु	हिरण्यकश्यप	ऋषिकेश	ऋषीकेश
स्थिति	स्थिती	सत्वगुण	सतीगुण
समीक्षा	समिक्षा	स्थायी	स्थाई
सहिष्णु	सहीष्णु	संवाद	सम्वाद
सुन्दरता	सौंदर्यता	संवारना	सवारना
साम्राज्य	सम्राज्य	सौजन्य	सौजन्यता
स्वावलम्बन	स्वालम्बन	सम्मान	सन्मान
युधिष्ठिर	युधिष्ठर	द्वारका	द्वारिका
तदनन्तर	तदान्तर	ब्रज	बृज
विशिष्ट	विशिष्ठ	निष्कपट	निष्कपटी
निरपराध	निरपराधी	ऊर्ध्व	उर्ध्व
गृहीत	ग्रहीत	प्रथा	पृथा
द्रष्टा	दृष्टा	जाग्रत	जागृत
अनूदित	अनुदित	शुश्रुषा	सुश्रूषा
एषणा	ऐषणा	ऐकान्तिक	एकांतिक
अन्त्याक्षरी	अंताक्षरी	पारलौकिक	परलौकिक
मालिन	मालन	अहल्या	अहिल्या
नीरसता	निरसता	संग्रहीत	संगृहीत
निर्दय	निर्दयी	अनुग्रह	अनुगृह
अनधिकृत	अनाधिकृत	भागीरथी	भगीरथ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आजीविका	अजीविका	कुमुदिनी	कुमुदनी
पटाक्षेप	पटाच्छेप	सौन्दर्य	सौंदर्यत्व
आह्वान	आहवान	असाम्य	असाम्यता
उच्छृंखला	उश्रृंखला	यथेष्ट	यथेष्ठ
बहिरंग	वाहिरंग	सृजन	सर्जन
गरिष्ठ	गरिष्ट	अन्तर्धान	अंतर्ध्यान
परिच्छेद	परिछेद	तन्मय	तत्मय
परमौषधि	परमोषधि	मनःकामना	मनोकामना
यशोलाभ	यशलाभ	रीत्यनुसार	रीत्यानुसार
उद्विग्न	उदिग्न	अधोगति	अधगति
नदीश	नदेश	दिग्जाल	दिगजाल
पुनरभिनय	पुनराभिनय	मनःकष्ट	मनोकष्ट
इतःपूर्व	इतिपूर्व	निरुपम	निरोपम
अक्षौहिणी	अक्षोहिणी	मतैक्य	मतेक्य
सद्गति	सत्गति	स्वयंवर	स्वयम्वर
अत्युक्ति	अत्योक्ति	मनोज्ञ	मनज्ञ
जगन्नाथ	जगतनाथ	मनोहर	मनहर
दुस्तर	दुष्तर	दिवरात्र	दिवारात्रि
दुरात्मगण	दुरात्मागण	सानन्द	सानन्दित
गुणिगण	गुणीगण	भ्रातृगण	भ्रातागण

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
योगिवर	योगीवर	सत्वगण	सतोगण
प्राणिवृंद	प्रणीवृन्द	मंत्रिवर	मंत्रीवर
सलज्ज	सलज्जित	अहिर्निश	अहर्निश
सशंक	सशंकित	आत्मपुरुष	आत्मापुरुष
चारुता	चारुताई	अनभल	अभल
द्विवार्षिक	द्वैवार्षिक	प्रफुल्ल	प्रफुल्लित
ज्ञानवान	ज्ञानमान	आग्नेय	अग्नेय
अनावासिक	अनवासिक	आनुषंगिक	अनुषांगिक
भुजंगी	भुजंगिनी	कृशांगी	कृशांगिनी
प्रेयसी	प्रेयसि	सुलोचना	सुलोचनी
कोमलांगी	कोमलांगिनी	चातकी	चातकनी
अकस्मात्	अकस्मात	राजन्	राजन
सतत्	सतत	विद्वान्	विद्वान
शृंगार	सिंगार	केंद्रीय	केंद्रिय
इकट्ठा	इकठ्ठा	इच्छा	ईच्छा
इंग्लैंड	इंगलेंड	इंजेक्शन	इंजैक्शन
ईजाद	इजाद	ईसाई	इसाई
ईमानदारी	इमानदारी	उद्घाटन	उदघाटन
उद्यत	उद्दत	उनतीस	उन्तीस
उपलक्ष्य	उपलक्ष	ऊहापोह	उहापोह

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ऊधम	उधम	एकत्र	एकत्रित
एहसास	अहसास	एहतियात	ऐहतियात
ऐक्ट	एक्ट	ऐच्छिक	एच्छिक
ऐंकर	एंकर	कालिदास	कालीदास
कोटि	कोटी	क़ूवत	कूबत
कीजिए	करिये	क्योंकि	क्योकी
कागज़ात	कागजातों	कसौटी	कसोटी
कैबिनेट	केबिनेट	कारागृह	काराग्रह
झोंका	झोका	झोंपड़ी	झोपड़ी
टेलीविजन	टेलिविजन	टिप्पणी	टिपण्णी
ड्राइवर	ड्राईवर	ताबूत	ताबुत
तूफ़ान	तुफान	तत्त्व	तत्व
तात्कालिक	तत्कालिक	तृतीय	त्रितीय
त्रिकालदर्शी	तृकालदर्शी	तत्त्वावधान	तत्वाधान
तिनतरफा	तीनतफरा	तबीयत	तबियत
तिथि	तिथी	त्यौरी	त्योरी
त्योहार	त्यौहार	तिलिस्म	तिलस्म
तुष्टीकरण	तुष्टिकरण	थर्माकोल	थरमाकोल
थीसीस	थीसिस	दरियाई	दरियायी
द्वंद्व	द्वन्द	दंपति/दंपती	दंपत्ति

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
दीपावली	दिवाली	दयालु	दयालू
दायित्व	दायित्त्व	दुरवस्था	दुरावस्था
दुरुपयोग	दुरूपयोग	परिप्रेक्ष्य	परिपेक्ष्य
पुनर्वास	पुर्नवास	पड़ोस	पड़ौस
प्रदर्शन	प्रर्दशन	प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी
पुनर्जन्म	पुर्नजन्म	फुट	फिट
फ़जूल	बेफ़ज़ूल	बाबत	बावत
बीमार	बिमार	बरदाश्त	बर्दाश्त/बर्दास्त
बादाम	बदाम	ब्राह्मण	ब्रह्मण
बजाय	बजाए	बहू	बहु
बाज़ार	बजार	बांग्ला	बंगला
बाक़ायदा	बकायदा	बिस्वा	बिसवा
बल्ब	बल्व	बीवी	बीबी
बेचना	बेंचना	भगवत्प्रेम	भागवत्प्रेम
भुखमरी	भूखमरी	भौंक	भोंक
भास्कर	भाष्कर	भेड़	भेंड़
महत्त्व	महत्व	मालूम	मालुम
शांति	शान्ती	शिशु	शिशू
शशिकांत	शशीकांत	शंभु	शंभू
श्मशान	शमशान	शिविर	सिविर

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
शांतिमय	शांतमय	शय्या	शैया
श्रीमती	श्रीमति	षड्यंत्र	षड़यंत्र
स्थिति	स्थिती	स्थायी	स्थाई
सुमेरु	सुमेरू	संवर्धन/संवर्द्धन	संवर्दन
सूची	सूचि	सामान	समान
संपत्ति	संपत्ती	साप्ताहिक	सप्ताहिक
सांसारिक	संसारिक	सिंहवाहिनी	सिंहवाहनी
साधु	साधू	स्वास्थ्य	स्वास्थ
साइकिल	सायकिल	सौंदर्य	सौंदर्यता
स्वावलंबी	स्वालंबी	सामर्थ्य	सामर्थ
सशक्तीकरण	सशक्तिकरण	स्वप्नद्रष्टा	स्वप्नदृष्टा
सदृश	सदृश्य	साइबर	साईबर
सिंकाई	सिकाई	सुचारु	सुचारू
सूबेदार	सुबेदार	सूचीबद्ध	सूचिबद्ध
संवाद	सम्वाद	समाधि	समाधी
उद्योगीकरण	औद्योगीकरण	आहुति	आहूती
वज़ीफा	बजीफा	रामचरितमानस	रामचरित मानस
धोबनी	धोबिन	बाल्मीकी	बाल्मीकि
व्यावसायिक	व्यवसायिक	श्वसुर	ससुर

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
हरिद्रा	हल्दी	माक्षण	माखन
क्लिष्ट	क्लिष्ठ	वाङ्ग्मय	बांगमय
लघुउत्तरीय	लघुत्तरीय	गत्यवरोध	गत्यावरोध

शुद्ध-अशुद्ध -वाक्य :-

अशुद्ध - ये बक्सा बहुत भारी है।
शुद्ध - यह बक्सा बहुत भारी है।

अशुद्ध - इस वर्ष गेहूँ का फ़सल अच्छा हुआ।
शुद्ध - इस वर्ष गेहूँ की फ़सल अच्छी हुई।

अशुद्ध - पैंट सिल गया है, पर बटन नहीं टँका है ।
शुध्द - पैंट सिल गई है, पर बटन नहीं टँकें हैं।

अशुद्ध - आपके एक-एक शब्द प्रभावशाली होते।
शुध्द - आपका एक-एक शब्द प्रभावशाली होता ।

अशुद्ध -उसके अंग-अंग काट डाले गए।
शुद्ध - उसका अंग-अंग काट डाला गया।

अशुद्ध - गिरते ही उसका प्राण निकल गया।
शुद्ध - गिरते ही उसके प्राण निकल गए।

अशुद्ध - कक्षा में बीस बच्चा अवश्य होना चाहिए।
शुद्ध - कक्षा में बीस बच्चे अवश्य होने चाहिए।

अशुद्ध - घर पर सब कुशल हैं।
शुध्द - घर में सब कुशल हैं।

अशुद्ध - मैंने हँस दिया।
शुद्ध - मैं हँस दिया।

अशुद्ध - मेरा भाई कल को आएगा।
शुद्ध - मेरा भाई कल आएगा।

अशुद्ध - अच्छे व्यवहार को रखो।
शुध्द - अच्छा व्यवहार रखो।

अशुद्ध - यह पुस्तक अनंत का है।
शुद्ध - यह पुस्तक अनंत की है।

अशुद्ध - वह घर को जा रहा है।
शुद्ध - वह घर जा रहा है।

अशुद्ध - दरवाज़ा का बाईं ओर बरामदा है।
शुद्ध - दरवाज़े के बाईं ओर बरामदा है।

अशुद्ध - आप आए पर तुम बैठे नहीं।
शुद्ध - आप आए पर आप बैठे नहीं।

अशुद्ध - वह लोग कल आ जाएँगे।
शुद्ध - वे लोग कल आ जाएँगे।

अशुद्ध - तुम तुम्हारी किताब निकालो।
शुद्ध - तुम अपनी किताब निकालो।

अशुद्ध - मेरे को तेरे से जरूरी काम
शुद्ध - मुझे तुझसे ज़रूरी काम है।

अशुद्ध - इन सबों ने मेरी शिकायत करी।
शुद्ध - इन सबने मेरी शिकायत की।

अशुद्ध - मैंने आज काम पूरा कर लेना है।
शुद्ध -मैं आज काम पूरा कर लूंगा।

अशुद्ध - आपको मिलकर मैं अति प्रसन्न हुआ।
शुद्ध - आपसे मिलकर मुझे अति प्रसन्नता हुई।

अशुद्ध - क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंका।
शुध्द - क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंके।

अशुद्ध - तुमने यह क्या करा?
शुद्ध - तुमने यह क्या किया ?

अशुद्ध - यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठा था।
शुध्द - यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठे थे।

अशुद्ध - देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर करते
शुद्ध - देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर हैं।

अशुद्ध -विवेकानंद जीवन तक ब्रह्मचारी रहे।
शुद्ध - विवेकानंद आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

अशुद्ध - वहाँ कोई लगभग पाँच सौ लोग थे।.
शुध्द - वहाँ लगभग पाँच सौ लोग थे।

अशुद्ध - उसके पास केवल नाममात्र धन रह गया है।
शुध्द - उसके पास नाममात्र धन रह गया है।

अशुद्ध - सारा माल हाथ-हाथ बिक गया।
शुध्द - सारा माल हाथों-हाथ बिक गया।

अशुद्ध मेरी बात ध्यान के साथ सुनो। -
शद्ध मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो। -